



Kumar

25 Feb 2026

06:42 AM

Bettiah

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121517601

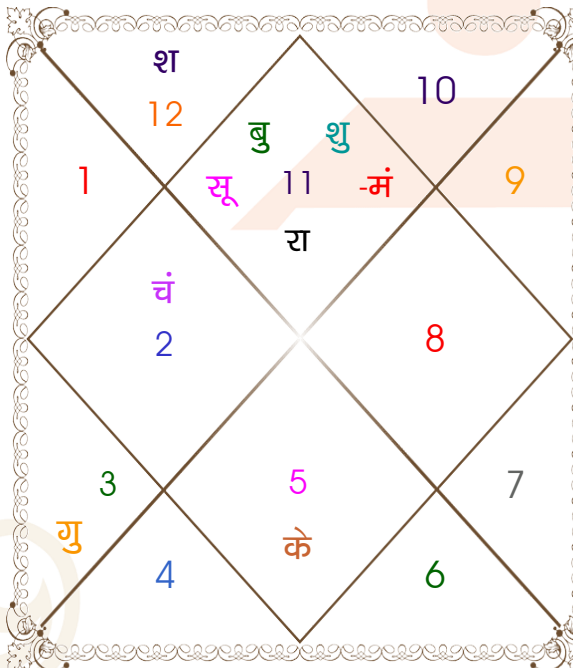
तिथि 25/02/2026 समय 06:42:00 वार बुधवार स्थान Bettiah चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:27  
अक्षांश 26:49:00 उत्तर रेखांश 84:30:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार 00:08:00 घंटे

<b>पंचांग</b>	<b>अवकहड़ा चक्र</b>
साम्पातिक काल : 17:09:41 घं	गण _____: मनुष्य
वेलान्तर _____: 00:13:04 घं	योनि _____: सर्प
सूर्योदय _____: 06:20:10 घं	नाड़ी _____: अन्व्य
सूर्यास्त _____: 17:50:20 घं	वर्ण _____: वैश्य
चैत्रादि संवत _____: 2082	वश्य _____: चतुष्पाद
शक संवत _____: 1947	वर्ग _____: मृग
मास _____: फाल्गुन	रैजा _____: पूर्व
पक्ष _____: शुक्ल	हंसक _____: भूमि
तिथि _____: 9	जन्म नामाक्षर _____: वी-वीरसिंह
नक्षत्र _____: रोहिणी	पाया(रा.-न.) _____: लौह-स्वर्ण
योग _____: विष्कुम्भ	होरा _____: बुध
करण _____: बालव	चौघड़िया _____: लाभ

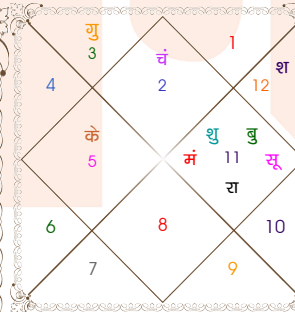
<b>विंशोत्तरी</b>	<b>योगिनी</b>
चन्द्र 3वर्ष 0मा 30दि	सिद्धा 2वर्ष 1मा 27दि
<b>चन्द्र</b>	<b>सिद्धा</b>
<b>25/02/2026</b>	<b>25/02/2026</b>
<b>27/03/2029</b>	<b>23/04/2028</b>
00/00/0000	00/00/0000
00/00/0000	00/00/0000
00/00/0000	00/00/0000
00/00/0000	00/00/0000
25/02/2026	00/00/0000
बुध 26/06/2026	25/02/2026
केतु 25/01/2027	भामरी 04/03/2026
शुक्र 25/09/2028	भद्रिका 22/02/2027
सूर्य 27/03/2029	उल्का 23/04/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			18:21:53	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			12:12:47	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	शत्रु राशि	1.29	पुत्र	पितृ	विपत
चंद्र			19:13:23	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण	1.25	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल	अ		01:24:26	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	सम राशि	1.36	कलत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध			28:12:57	कुंभ	पूर्वाभाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.46	आत्मा	ज्ञाति	क्षेम
गुरु	व		21:11:14	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.18	भ्रातृ	धन	क्षेम
शुक्र			24:03:47	कुंभ	पूर्वाभाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि	1.32	अमात्य	कलत्र	क्षेम
शनि			07:01:58	मीन	उभाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	1.08	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		14:45:16	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि	---		ज्ञान	विपत
केतु	व		14:45:16	सिंह	पूर्वाफाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि	---		मोक्ष	मित्र

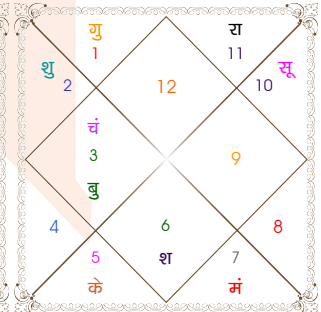
### लग्न-चलित



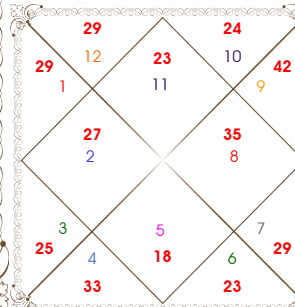
### चन्द्र कुंडली



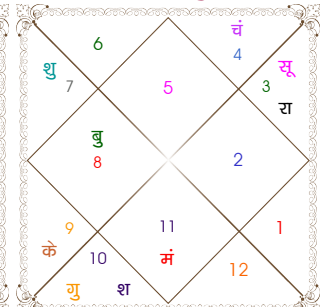
### नवमांश कुंडली



### सर्वाष्टकवर्ग



### दशमांश कुंडली



## नक्षत्रफल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक होगा। नक्षत्रानुसार आपका मनुष्य गण, वैश्यवर्ण, वर्ग मूषक, नाड़ी अन्त्य तथा सर्प योनि है। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का आधाक्षर "वि" या "वी" से प्रारम्भ होगा। यथा विनय, वीरेन्द्र आदि।

आप धर्म कर्म में तथा ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाले आस्तिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। आप देखने में सुन्दर दर्शनीय तथा स्वभाव से सुशील होंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे। किसी भी बात का तत्काल सार्थक उत्तर देने की क्षमता आपके अन्दर विद्यमान होगी। जिससे देखने या सुनने वाले चकित रह जाएंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा किसी कठिन से कठिन विषय को सरलता पूर्वक समझाने की कला में आप निपुण होंगे।

**धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारुशीलः विलसत्कलवेरः ।  
वाग्बिलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम् ।  
जातकाभरणम्**

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

धन से आप आजीवन युक्त रहेंगे। कभी भी आपको इसका अभाव प्रतीत नहीं होगा। आप उस आदमी के प्रति अत्यन्त ही कृतज्ञता प्रकट करेंगे जो आपका थोड़ा सा भी कोई कार्य सम्पन्न कर देता है। मंत्री या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आप प्रिय वाणी बोलने वाले होंगे जो सभी लोगों को प्रिय लगेगी। सत्य का अनुपालन आप अपने जीवन में करते रहेंगे।

**धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः ।  
सत्यवादी सुरुपश्च रोहिण्यां जायते नरः ।।  
मान सागरी**

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

स्वास्थ्य आपका सामान्य रूप से उत्तम रहेगा। रोगग्रस्त कम ही रहेंगे। उत्साह से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा जो भी कार्य आरम्भ करेंगे। उत्साह पूर्वक उसे सम्पन्न करेंगे। आपका चरित्र तथा आचरण उत्तम एवं प्रशंसनीय होगा।

**धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः ।  
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः ।।  
जातक दीपिका**

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

आप आत्मिक तथा शारीरिक पवित्रता दोनों का यत्नपूर्वक पालन करेंगे तथा प्रयत्न पूर्वक दोनों की पवित्रता आजीवन बनाए रखेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर होगी तथा जो भी कार्य करेंगे शीघ्रता से नहीं अपितु एकाग्रचित हो कर करेंगे।

**रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरुपश्च ।  
बृहज्जातकम्**

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

देखने में आपका शरीर स्वस्थ होगा। तथा अन्य जनों के दोषों को जान लेने में आप चतुर होंगे। आप एक विद्वान पुरुष भी होंगे।

**रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः ।।  
जातकपरिजातः**

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थों से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरुष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पत्तियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनों से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीडा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है अतः आप लालिमायुक्त गौर वर्ण के होंगे तथा आपके गाल भी स्थूल होंगे। आपके नेत्र बड़े-बड़े तथा मोटे होंगे। आलस्य का अंश भी स्वभाव से ही आपके अन्दर विद्यमान रहेगा। कुलीन लोगों के प्रति आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव निहित रहेगा। ब्राहमणों तथा गुरुजनों के भी आप परम आज्ञाकारी होंगे तथा श्रद्धा से उनका मान सम्मान करेंगे। आप अच्छी बुद्धि वाले होंगे तथा स्वभाव वात और कफ मिश्रित होगा। आपका जीवन प्रायः सुखी रहेगा तथा आप दानशील प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। आपके बाल भी

घुँघराले होंगे।

**पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी ।  
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी ।।  
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः ।।  
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः ।।**

**जातकदीपिका**

जीवन में आप सर्व प्रकार से सुखों से युक्त रहेंगे। शुद्धता तथा सफाई के प्रति आप प्रारम्भ से ही पूर्ण रूपेण सजग रहेंगे। समस्त कार्यों को सम्पन्न करने में आप पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगे। आप बलवान भी होंगे। धनागम पर्याप्त मात्रा में होने से आपकी प्रवृत्ति विलासी होगी तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए आप उन्मुक्त भाव से इन वस्तुओं पर व्यय करेंगे। तेजस्विता का भाव भी आपमें विद्यमान रहेगा। आप सद्गुणों से युक्त अच्छे मित्रों के मित्र होंगे तथा आपकी मित्रता भी दीर्घकालीन होगी।

**भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः ।  
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत् ।।**

**मानसागरी**

आपका मुख तथा जानु भाग दीर्घाकार होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्ट पूर्ण व्यतीत होंगे परन्तु अन्तिम दो भाग अत्यन्त ही सुख एवं आनन्द से व्यतीत होंगे। स्त्री वर्ग से आप विशेष आकृष्ट रहेंगे। क्षमाशीलता एवं त्याग की भावना आपके अन्तर्मन में निहित होगी। जिसका समयानुसार आप प्रदर्शन करते रहेंगे। प्रारम्भिकावस्था में आपको सामान्य रूप से कष्ट सहने पड़ेगे तथा परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा। आपके पीठ मुख तथा बगल में तिल, मरसा या व्रणादि का निशान भी हो सकता है।

**पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात् ।  
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च ।।  
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान ।  
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः ।।**

**फलदीपिका**

आपकी कन्या सन्तति की संख्या पुत्र संतति से अधिक होगी। आपका व्यवहार तथा चरित्र प्रशंसनीय होगा। आप आजीवन धन का उपभोग करते हुए अपने यश को चारों तरफ फैलाएंगे।

**दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ ।**

**जातकपरिजातः**

आप विशाल वक्षस्थल तथा घने बालों से युक्त रहेंगे तथा आप न्याय प्रिय तथा शुद्धाशुद्ध का ज्ञान करने में चतुर होंगे। आप सुन्दर गति से चलेंगे तथा शरीर तथा शरीर के अंग

दीर्घ तथा सुडौल होंगे ।

**व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली  
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः  
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजडघः  
साकः पार्श्वस्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ ।।  
सारावली**

आप मन्द गति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगे । परोपकार की भावना का समावेश स्वभाव से ही आपके मन में रहेगा तथा आप इसका प्रदर्शन समयानुसार करते रहेंगे । इसी प्रकार अपने सत्कार्यों तथा पुण्य के द्वारा जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे ।

**स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम् ।  
वृषगतो हिमगुर्भुशमादिशेत सुकृतिः कृतिशच सुखानि च ।।  
जातकभरणम्**

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा । मुखमण्डल की आकृति थोड़ी बड़ी होगी तथा विलास सहित गमन प्रिय होंगे । आपके अन्दर जठराग्नि की भी प्रबलता रहेगी । स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय रहेंगे तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगे । इसके अतिरिक्त आप अच्छे स्वभाव वाले तथा शिव एवं विष्णु भगवान की आराधना करने वाले होंगे ।

**कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वार्ङ्कितः ।  
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः ।।  
पूर्वेबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी ।  
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि ।।  
बृहज्जातकम्**

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं । अतः आप धार्मिक प्रवृत्ति एवं श्रद्धालु व्यक्ति होंगे । देवता तथा ब्राह्मणों में आपकी असीम सेवा भावना युक्त श्रद्धा होगी । अभिमान का अंश भी आपके अन्दर व्याप्त रहेगा । आप बल से युक्त रहेंगे तथा दया तथा करुणा की भावना आपके हृदय में व्याप्त रहेगी । अतः दीन दुःखियों की आप यथा शक्ति सेवा तथा सहायता करेंगे । आप एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं के जानने वाले होंगे । ज्ञानार्जन में आपकी पूर्ण रुचि रहेगी तथा इसको प्राप्त करने में आपको सफलता प्राप्त होगी । साथ ही बहुत से लोगों को आप सुख प्रदान करेंगे ।

**वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी ।  
वृहत्पाराशर होराशास्त्र**

धन तथा मान सम्मान से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा इनका आपको आजीवन अभाव नहीं रहेगा । आप निशाने बाजी की कला में अत्यन्त दक्ष होंगे । आप गौरवर्ण के होंगे तथा

नगरवासियों को वश में करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे अर्थात् आप किसी नगर के प्रमुख व्यक्ति हो सकते हैं। आपकी आँखें भी आकृति में बड़ी होंगी।

**देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।**

**प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।**

**जातकाभरणम्**

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आप सर्प योनि में पैदा हुए हैं। अतः आप कभी कभी अत्यन्त क्रोध के भाव का प्रदर्शन करेंगे। प्रवृत्ति में भी चंचलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा आप अत्यन्त स्वाद लोलुप होंगे। खट्टा मीठा, तीखे स्वादों की आप हर समय इच्छा रखेंगे।

**दीर्घरोषो महाकूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।**

**चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।**

**मानसागरी**

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाकूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ़ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्णता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध

मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए मार्गशीर्ष, मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्याराशि में चन्द्रमा यह समय सदैव अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण लेन-देन, कय-विकय आदि न करें। इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा में भी कोई कार्य प्रारम्भ न करें। अन्यथा अशुभ फल ही अधिक मिलेंगे। इस प्रकार शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि समय आपके अनुकूल न चल रहा हो शारीरिक या मानसिक कष्ट हो रहा हो व्यापार में हानि या नौकरी अथवा प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो ऐसे समय में आपको शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, कपूर, शहद इत्यादि पदार्थों का भी ध्यान रखना चाहिए। इससे मानसिक शक्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आपको शुक के तांत्रिय मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 20 हजार जप करवाने चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फल कम होंगे तथा लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान शिव या विष्णु की आराधना भी कर सकते हैं।

**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**

**मंत्र- ॐ ह्रीं शीं शुक्राय नमः।**